

## ভট্টনায়ক ও মতবাদ

ভট্টলোল্লট ও শ্রীশঙ্কুকের রসবাদকে খণ্ডন করে নতুন রসতত্ত্ব প্রতিষ্ঠিত করেন পরবর্তী যুগের আলঙ্কারিক ভট্টনায়ক। তিনি ভরত-প্রণীত নাট্যশাস্ত্রের উপর কোনো ধারাবাহিক ভাষ্য রচনা করেছিলেন কিনা তা জানা যায় না। ভট্টলোল্লট ও শ্রীশঙ্কুকের রচনার ন্যায় ভট্টনায়কের রচনাও কালের স্রোতে সম্পূর্ণরূপে বিলুপ্ত হয়ে গেছে। কিন্তু তাঁর রসতত্ত্বের বিস্তৃত বিবরণ অভিনবগুপ্ত রচিত "অভিনব-ভারতী" ভাষ্যে পাওয়া যায়। মম্মট সম্ভবত "অভিনব-ভারতী" হতে ভট্টনায়কের মতবাদ উদ্ধৃত করেছেন। এই মতবাদ পরবর্তীকালে ভুক্তিবাদ নামে অলঙ্কারগোষ্ঠীতে প্রসিদ্ধি লাভ করেছেন। এই মত সূত্রস্থ সংযোগ শব্দের অর্থ শাস্বত প্রতীকরূপে উপস্থিতি ও নিষ্পত্তি শব্দের অর্থ উপভোগ। ভট্টলোল্লট ও শঙ্কুকের রসতত্ত্বের প্রধান দোষ ছিল যে, তাঁরা অন্যানিষ্ঠ স্থায়িভাবের জ্ঞানকে অন্যানিষ্ঠ আনন্দের কারণ বলে নির্দিষ্ট করেছিলেন। তাঁদের মতে দৃশ্যন্ত-নিষ্ঠ রসের জ্ঞান, তা প্রাত্যক্ষিক-ই হোক আর আনুমানিক-ই হোক, সহৃদয় সামাজিকের চিত্তে অলৌকিক আনন্দ সঞ্চারিত করতে পারে। ভট্টনায়কের আপত্তি এইখানেই, তাঁর মতে পরগতরসের প্রতীতি হতে কখন-ই সামাজিকচিত্তে আনন্দ উত্পন্ন হতে পারে না। কাব্যপাঠক বা রঙ্গপ্রেক্ষক উদাসীন থাকলে তাদের পক্ষে রসাস্বাদ সম্ভব নয়। ভট্টনায়ক বলেছেন, সহৃদয় সামাজিক যদি রসকে স্বগতভাবে অনুভব করতে পারে, তবেই কাব্য-পাঠ বা নাট্যাভিনয় দর্শন হতে আনন্দলাভ তার পক্ষে সম্ভব হয়। এইজন্য-ই ভট্টনায়ক ভাবনা ও ভোজকত্ব নামক দুটি নতুন ব্যাপারকে স্বীকার করে নিয়ে রসানুভূতিজনিত আনন্দাস্বাদকে ব্যাখ্যা করেছেন। ভট্টনায়কের মতে নাট্য ও

কাব্যে অভিধাশক্তিৰ দ্বাৰা প্ৰথমে শব্দসমষ্টিৰ প্ৰাথমিক অৰ্থবোধ হয়। অৰ্থাত শব্দ শ্ৰবণ কৰে সহৃদয় সামাজিক বুঝতে পারে कि कि विभाव, कि कि अनुभाव, कि कि व्याभिचारिभाव, कोनटि स्थायिभाव इत्यादि। पुरे भावकत्वव्यापारेर द्वाऱा उपस्थित विभाव, अनुभाव, व्याभिचारिभाव ओ स्थायिभावसमूह तार निकट आदर्शीकृत, नैर्व्यक्तिक ओ साधारण भावे प्रतिभात हय। नायक-नायिका साधारणभावे कान्त-कान्तारूपे तार निकट उपस्थापित हय। शकुन्तला तार निजस्वरूप विसर्जन दिये केवलमात्र कान्तारूपे तार निकट उपस्थित हन। दुष्यन्तओ तार व्याक्तिह अर्जन कुरे देशकालविनिर्मुक्त नायकेर आदर्श प्रतीकरूपे प्रतिभात हन। भूँनायक बलेछेन, काव्ये दोषरहित ओ गुणालङ्कार संस्कृत शब्दार्थेर प्रयोग कविवर्णित चरित्र ओ वस्तुसमूहके एकटि सर्वजनीन रूप दान कुरे। तादेरके शाश्वत आदर्श वा प्रतीक कुरे तोले। सङ्गे सङ्गे ता पाठकेर परिच्छिन्न व्याक्तिहबोधके दूर कुरे दिये तार व्याप्तिस्वरूपके जाग्रत कुरे देय। नाटे चतुर्विध अभिनय, नाट्यसंस्कार ओ नृत्य-गीत-वाद्येर सन्निवेश अनुरूपभावे उपस्थापित पात्र-पात्री ओ देश-काल-अवस्थाभावके शाश्वत आदर्शरूपे गडे तोले एवं सङ्गे सङ्गे श्रोतार संकीर्ण अहंताबोधके विलीन कुरे दिये तार मध्ये अपरिमित अहंताबोधके जाग्रत कुरे देय। सहृदय म्फुद्रसत्ताके लङ्घन कुरे चले यय ओ बृहत्तर सत्ताय उनीत हय। मने राखा प्रयोजन, अभिधा शब्देर शक्ति। भावना दोषवर्जित ओ गुणालङ्कार संस्कृत काव्य एवं चतुर्विधाभिनयोपचित ओ नृत्य गीत वाद्ययुत नाटेर शक्ति। आर भोजकह सम्पूर्णरूपे सहृदयेर आन्तर शक्ति। ता दर्शक ओ पाठकेर मने থাকे। भूँनायक बलेछेन, भोजकह नामक तृतीय व्यापारेर द्वाऱा रजोगुण ओ तमोगुणेर गुणीभावेर फले सहृदय सामाजिकेर चित्ते सत्त्वगुण उद्विक हय।

সত্ত্বোদ্ভেদের পর তার চিত্ত শৈর্ষ্য প্রাপ্ত হয়। পার্থিব বা বাহ্য কোনো বস্তুর দ্বারা সেটির বিচলিত হওয়ার সম্ভাবনা থাকে না। চিত্ত স্বচ্ছ ও স্থির হলে তাতে আত্মার আনন্দাংশ অব্যাহতভাবে স্ফুরিত হয়। স্বচ্ছতা ও শৈর্ষ্যযুক্ত চিত্তে স্বরূপানন্দ-চৈতন্যের স্ফুরণ দার্শনিক সিদ্ধান্তসম্মত। এইরূপ অনাবৃত আনন্দাংশের দ্বারা রতি প্রভৃতি স্থায়ীভাব সাক্ষাত্‌কৃত হলে সামাজিকের চিত্তে রসাস্বাদ উল্লসিত হয়।